उत्तराखंड बोर्ड परीक्षा 2024-25

अर्थशास्त्र (Economics)

समय: 3 घंटे पूर्णांक: 80

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड 'अ' तथा 'ब' है दोनों खंड के सभी 28 प्रश्न अनिवार्य है।
- प्रश्नों हेतु निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित है।
- प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़िए है तथा समुचित उत्तर दीजिए।
- प्रश्न संख्या 1 तथा 15 बहुविकल्पीय प्रश्न है। इन प्रश्नों के प्रत्येक खंड के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं। सही विकल्प अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए। प्रश्न संख्या 2 से 4 तथा 16 से 18 तक निश्चित उत्तरीय प्रश्न हैं।
- प्रश्न संख्या 5 से 8 तथा 19 से 22 तक प्रत्येक का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए।
- प्रश्न संख्या 9 से 11 तथा 23 से 25 तक प्रत्येक उत्तर लगभग 70 शब्दों में दीजिए।
- प्रश्न संख्या 12 से 14 तथा 26 से 27 तक प्रत्येक उत्तर लगभग 70 शब्दों में दीजिए।
- प्रश्न संख्या 28 केस/स्रोत आधारित प्रश्न है जिसका उत्तर निर्देशानुसार की दीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में समग्र पर कोई विकल्प नहीं है तथापि कतिपय प्रश्नों में आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया है ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का ही उत्तर दीजिए।

खंड अ

1. **(क) किसने ने कहा कि अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है:**

a) मार्शल

b) रॉबिन्स

c) एडम स्मिथ

d) कींस

(ख) अर्थशास्त्र की केंद्रीय समस्या क्या है?

a) क्या उत्पादन हो

b) कैसे उत्पादन हो

c) उत्पादित वस्तुओं के वितरण कैसे हो

d) उपरोक्त सभी

(ग) सीमांत उपयोगिता का सूत्र है:

a) $\frac{TU}{Q}$

b) $\frac{\Delta TU}{\Delta Q}$

c) $\frac{\Delta AU}{\Delta Q}$

d) ΣMU

(घ) मांग का संबंध होता है:

a) वस्तु के इच्छा

b) एक निश्चित मूल्य

c) व्यय करने की तत्परता

d) उपरोक्त सभी

(ङ) निम्नलिखित दोनों कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनिए:

अभिकथन(A): मानव की आर्थिक क्रिया का अध्ययन ही अर्थशास्त्र है।

कारण(R): आर्थिक क्रिया वह क्रिया है, जिसका संबंध आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए सीमित साधनों के उपयोग से है।

a) A तथा R दोनों सही तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

b) A तथा R दोनों सहयोग तथा R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

c) A सही है तथा R गलत है।

d) A तथा R दोनों गलत है।

2. वास्तविक अर्थशास्त्र क्या है? (1)

उत्तर: वास्तविक और शास्त्र वहाँ विश्लेषण हैं जिनमें उन तथ्यों का अध्ययन किया जाता है जिनकी सत्यता की जांच की जा सकती है और समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है।

3. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को परिभाषित कीजिए। (1)

उत्तर: वह अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पत्ति के साधनों का प्रमुख भाग पूँजीवादी उद्योग में कार्यरत होता है पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।

4. कुल उपयोगिता क्या है? (1)

उत्तर: उपभोक् की सभी इकाइयों का उपभोग करने के पश्चात प्राप्त उपयोगिता का योग कुल उपयोगिता होती है।

5. केंद्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था क्या है? स्पष्ट कीजिये (2)

उत्तर: वह अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन के साधनों पर समाज या सरकार का नियंत्रण होता है तथा आर्थिक क्रिया का संचालन समाज के हित के लिए किया जाता है। इस बाजार को *केंद्रीय रूप से नियोजित अर्थव्यवस्था* भी कहा जाता है। इसमें आर्थिक स्वतंत्रता नहीं पायी जाती।

इस अर्थव्यवस्था में केंद्रीय समस्याओं का समाधान सामाजिक प्राथमिकताओ के आधार पर आर्थिक नियोजन या योजना तंत्र के द्वारा किया जाता है।

6. एक वस्तु की बाजार मांग को प्रभावित करने वाले तत्वों को बताएं। (2)

उत्तर: वस्तु की बाजार मांग को प्रभावित करने वाले तत्वों :

वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, उपभोक्ता की आय, उपभोक्ता की रुचि, उपभोक्ताओं को आशाएं, जनसंख्या तथा आय का वितरण आदि

7. अल्पकाल तथा दीर्घकाल से क्या आशय है? (2)

उत्तर: अल्पकाल तथा दीर्घकाल के संकल्पनाअल्पकाल समय की वह अवधि है जिस में उत्पादन के कुक कारक स्थिर होते हैं तथा कुछ केवल परिवर्ती होते हैं | अल्पकाल में कम से कम एक कारक ,श्रम अथवा पूँजी में परिवर्तन नहीं किया जा सकता अत: वह स्थिर रहता है| इस अवधि में, एक फर्म परिवर्तनशील साधनों में परिवर्तन कर सकती है, न की स्थिर साधनों में | दीर्घकाल वह समयावधि है जिस में उत्पादन के सभी कारकों को बदला जा सकता है| दीर्घकाल में उत्पादन के सभी कारकों में परिवर्तन लाया जा सकता है|

8. कीमत रेखा किसे कहते हैं चित्र रेखा द्वारा स्पष्ट कीजिए? (2)

उत्तर: कीमत रेखा दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को व्यक्त करती है जो उपभोक्ता अपनी दी हुई आय एवं वस्तुओं की वर्तमान कीमत के आधार पर खरीद सकता है।

संयोग	वस्तु X	वस्तु Y	व्यय की मुद्रा = आय (Y)
E	5	0	5×4+0×2= 20
F	4	2	4×4+2×2=20
G	3	4	3×4+4×2=20
H	2	6	2×4+6×2=20
I	1	8	1×4+8×2=20
J	0	10	0×4+10×2=20

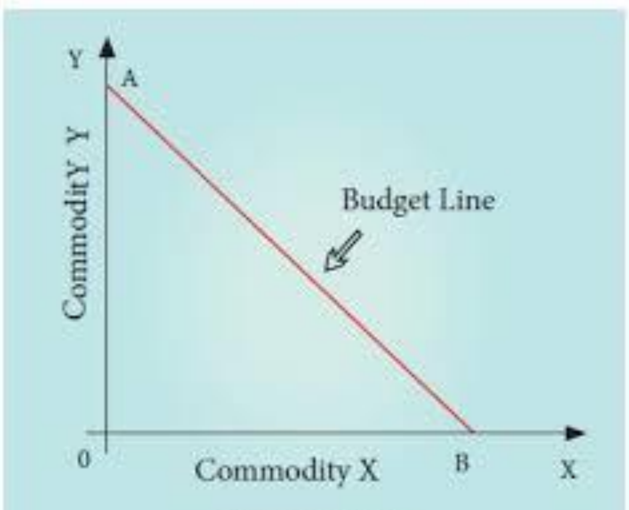

Diagram 2.20

9. अनधिमान वक्रों के लक्षण या विशेषताओं को रेखांकित सहित समझाइए (3)

उत्तर: अनाधिमान वक्रों के लक्षण/ विशेषताएं:

I. उदासीनता वक्र बाएं से दाएं नीचे की ओर गिरता हुआ होता है
II. उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होते हैं
III. दो उदासीनता वक्र एक दूसरे को काटते
IV. ऊंचे उदासीनता वक्र संतुष्टि के ऊंचे स्तर को व्यक्त करते हैं

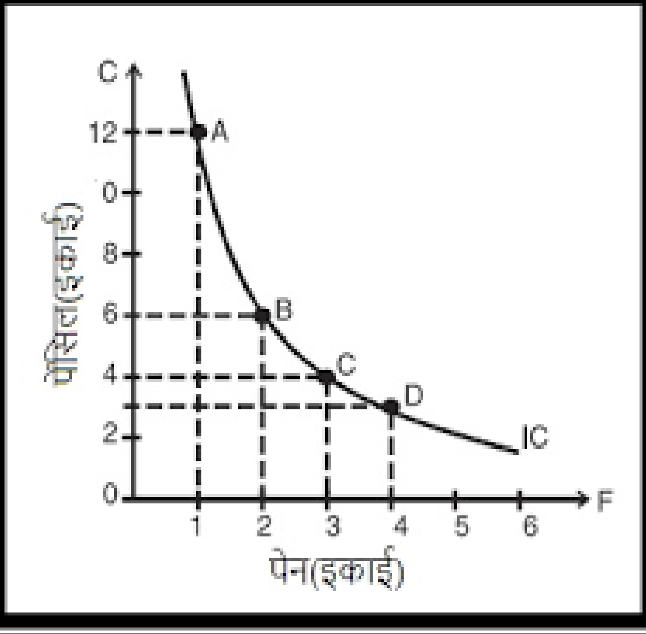

10. परिवर्तित अनुपात का नियम क्या है? इससे स्पष्ट कीजिये (3)

उत्तर: आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, उत्पादन में जब स्थिति साधनों के साथ परिवर्तनशील साधन की मात्रा में वृद्धि की जाती है, तो श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण के कारण अविभाज्य साधन का कुशल प्रयोग संभव हो पाता है और एक बिंदु पर साधनों का आदर्श संयुक्त स्थापित होता है।

इस बिंदु के बाद जैसे जैसे परिवर्तनशील साधन की इकाइयों में वृद्धि की जाती है, वैसे वैसे सीमांत उत्पादन (MP) गिरता चला जाता है और इसे परिवर्ती अनुपात का नियम या *उत्पत्ति ह्रास नियम* के नाम से जाना जाता है।

श्रीमति जॉन रॉबिंस के अनुसार, “यह उत्पत्ति ह्रास नियम यह बताता है कि यदि किसी एक उत्पत्ति के साधन की मात्रा को स्थिर रखा जाए और अन्य साधनों की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाए तो एक निश्चित बिंदु के बाद उत्पादन में घटती दर से वृद्धि होगी”।

11. पूर्णतया बेलोचदार मांग को समझाइए (3)

उत्तर: **पूर्ण बेलोचदार मांग (Perfectly Inelastic Demand)**

जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता, तो ऐसी मांग को पूर्णतः बेलोचदार मांग कहते हैं। $(E_d = 0)$

$\frac{\Delta Q}{Q} = 0$

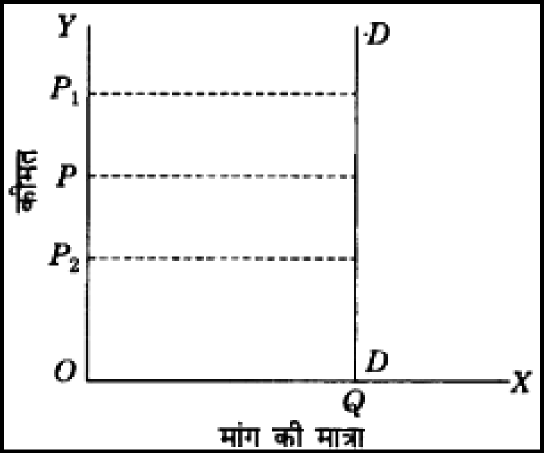

अथवा

प्रश्न: बजट सेट में बदलाव से आप क्या समझते हैं (3)

उत्तर: बजट सेट में बदलाव तब होता है, जब उपभोक्ता की आय या वस्तुओं की कीमतों में बदलाव होता है:

- बजट सेट में बदलाव के कारण, उपभोक्ता उन वस्तुओं और सेवाओं के संयोजन को बदल सकता है जिन्हें वह खरीद सकता है.
- **बजट सेट में बदलाव के कुछ कारण:**
    - आय में बदलाव - जब: उपभोक्ता की मौद्रिक आय में परिवर्तन होता है। यदि मौद्रिक आय बढ़ती है, तो उपभोक्ता दोनों वस्तुओं को अधिक खरीद सकता है। मौद्रिक आय घटने पर विपरीत होता है।
    - मूल्य में बदलाव - वस्तुओं की कीमतें बदलती रहती हैं। ऊंची कीमतों पर किसी वस्तु की कम मात्रा खरीदी जा सकती है और इसलिए उपभोक्ता की पसंद बदल जाती है। इसी प्रकार जिस वस्तु की कीमत बदल गई है, उस पर होने वाला खर्च भी बदल जाता है और बजट सेट भी बदल जाता है।

12. निम्न तालिका में एक फर्म की कूलर लागत सरणी दी गई है (5)

उत्पादन (इकाइयों में)	0	1	2	3	4	5	6	7	8
कुल उत्पादन (₹)	40	120	170	180	210	260	340	440	550

I. इस फर्म की कुल स्थिर लागत क्या है?

II. फर्म की AFC, AVC, AC तथा MC का परिकलन कीजिए।

उत्तर: कुल स्थिर लागत - 40

उत्पादन (इकाइयों में)	कुल उत्पादन (₹)	TFC	TVC	AFC	AVC	AC	MC
0	40	40	0	-	-	-	-
1	120	40	80	40	40	120	80
2	170	40	130	20	56	85	50
3	180	40	140	13.33	46.66	60	10
4	210	40	170	10	42.5	52.5	30
5	260	40	220	8	44	52	50
6	340	40	300	6.66	50	56.66	80
7	440	40	400	5.71	57.14	62.85	100
8	550	40	510	`5	63.75	68.75	110

13. पूर्ति अनुसूची एवं पूर्ति वक्र से आप क्या समझते हैं? (5)

उत्तर: **पूर्ति तालिका (Supply Schedule)**

विभिन्न कीमतों पर बाजार में वस्तु की बेची जाने वाली मात्राओं को यदि तालिका में व्यक्त कर दिया जाए तो इससे पूर्ति तालिका कहते हैं।

पूर्ति तालिका दो प्रकार की होती है:

व्यक्तिगत पूर्ति तालिका (Individual Supply Schedule)

एक विक्रेता किसी समय अवधि विशेष में विभिन्न कीमतों पर वस्तुओं की जितनी मात्रा बाजार को बेचने को तैयार रहता है, उसे यदि तालिका के रूप में प्रदर्शित किया जाये तो उसे हम व्यक्तिगत पूर्ति तालिका कहते हैं।

बाजार पूर्ति तालिका (Market Supply Schedule)

बाजार में सभी फर्में अथवा विक्रेता मिलकर विभिन्न कीमतों पर बाजार में कुल कितनी मात्रा बेचने को तैयार है, इसका निर्धारण एक तालिका में प्रदर्शित बाजार पूर्ति तालिका करती है।

पूर्ति वक्र (Supply Curve)

पूर्ति तालिका का वक्र के माध्यम से प्रदर्शित करना पूर्ति व कहलाता है।

पूर्ति वक्र दो प्रकार का होता है:

व्यक्तिगत पूर्ति वक्र (Individual Supply Curve)

व्यक्तिगत पूर्ति तालिका को वक्र पर प्रदर्शित करने पर व्यक्तिगत पूर्ति वक्र प्राप्त होता है।

कीमत प्रति इकाई (₹)	पूर्ति मात्रा (Q)
2	10
4	20
6	30
8	40
10	50

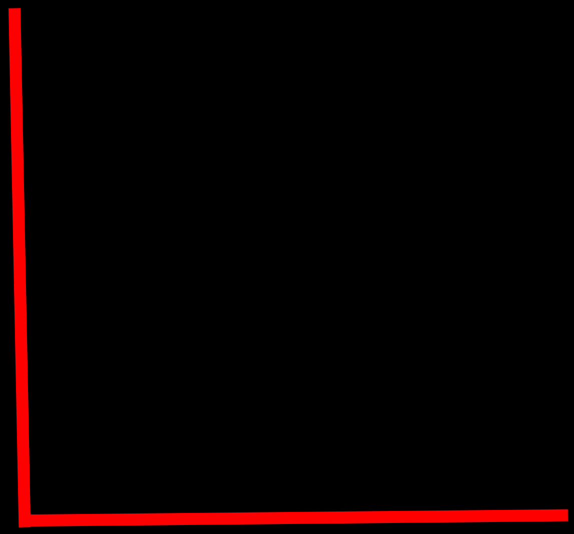

बाजार पूर्ति वक्र (Market Supply Curve)

बाजार पूर्ति तालिका को ग्राफ पेपर पर अंकित करके बाजार पूर्ति बक्र प्राप्त किया जा सकता है।

प्रति इकाई कीमत	विक्रेता A	विक्रेता B	बाजार पूर्ति (A +B)
2	10	5	15
4	20	10	30
6	30	15	45
8	40	20	60
10	50	25	75

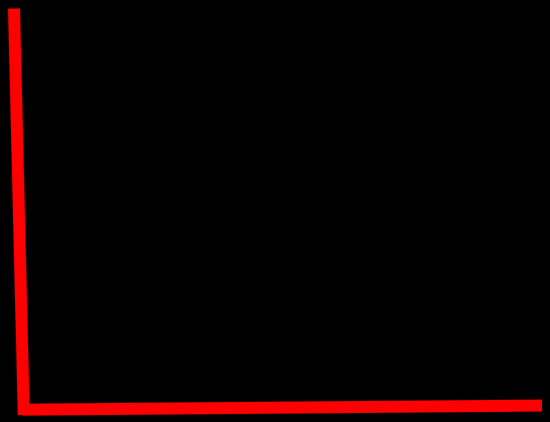

14. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत विक्रेता मूल्य स्वीकार करता है जबकि एक एकाधिकार के अंतर्गत विक्रेता मूल्य निर्धारित करता है। व्याख्या कीजिये (5)

उत्तर: हां, पूर्ण प्रतियोगिता में विक्रेता मूल्य स्वीकार करता है, जबकि एकाधिकार में विक्रेता मूल्य निर्धारित करता है:

- पूर्ण प्रतियोगिता में, बाज़ार की शक्तियों यानी मांग और आपूर्ति के आधार पर कीमतें तय होती हैं. वहीं, एकाधिकार में, एकमात्र विक्रेता कीमतें तय करता है.
- पूर्ण प्रतियोगिता में, कई विक्रेता और खरीदार होते हैं. वहीं, एकाधिकार में, केवल एक विक्रेता होता है.
- पूर्ण प्रतियोगिता में, उत्पाद एक जैसे होते हैं. वहीं, एकाधिकार में, उत्पाद अद्‌वितीय होता है.
- पूर्ण प्रतियोगिता में, बाज़ार में प्रवेश और निकास आसान होता है. वहीं, एकाधिकार में, प्रवेश पर कई बाधाएं होती हैं.

एकाधिकार में, विक्रेता अपने लाभ को ज़्यादा करने के लिए कीमतें तय करता है. इससे कीमतें अक्सर बढ़ जाती हैं और उपभोक्ताओं के पास कम विकल्प होते हैं.

अथवा

प्रश्न: एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में किसी फर्म की मांग वक्र की प्रवणता ऋणात्मक क्यों होती है? व्याख्या कीजिये

(5)

उत्तर: एकाधिकार प्रतिस्पर्धा में किसी फ़र्म की मांग वक्र की प्रवणता ऋणात्मक होती है क्योंकि कीमत और मांग की मात्रा के बीच विपरीत संबंध होता है. यानी, कीमतों में गिरावट के कारण किसी वस्तु की मांग की मात्रा में वृद्धि होती है. जब कोई फर्म अपने उत्पाद की कीमत में संशोधन करती है, तो प्रतिद्वंद्वी फर्म हमेशा अपने उत्पादों की कीमतें नहीं बढ़ाती हैं। इसलिए, मांग वक्र का ढलान छोटा होता है और उत्पाद की मांग अधिक लोचदार होती है।

एकाधिकार प्रतिस्पर्धा के बारे में कुछ और बातें:

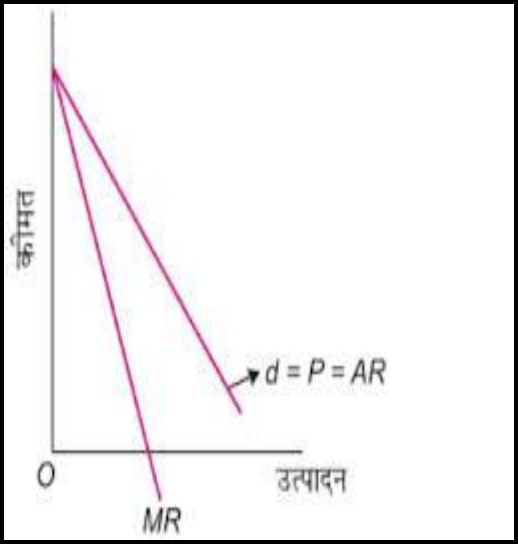

- एकाधिकार प्रतिस्पर्धा, अपूर्ण प्रतिस्पर्धा का एक प्रकार है. इसमें कई उत्पादक एक-दूसरे से अलग उत्पाद बेचते हैं.
- एकाधिकार प्रतिस्पर्धा में, बाज़ार में प्रवेश या निकास के लिए कोई बाधा नहीं होती.
- एकाधिकार प्रतिस्पर्धा के उदाहरणों में रेस्तरां, कपड़ों के ब्रांड, और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उद्योग शामिल हैं.
- एकाधिकार प्रतिस्पर्धा में मांग वक्र, विभेदीकरण और वैकल्पिक उत्पादों की उपलब्धता के कारण ज़्यादा लोचदार होता है.

खंड व

15. **(क) सामान्य कीमत स्तर एवं रोजगार का अध्ययन किया जाता है: (1)**

a) व्यष्टि अर्थशास्त्र में

b) समष्टि अर्थशास्त्र में

c) दोनों

d) इनमें से कोई नहीं

(ख) प्रवाह के अंतर्गत निम्नलिखित में कौन शामिल है (1)

a) उपभोग

b) निवेश

c) आय

d) उपरोक्त सभी

(ग) वस्तु विनिमय प्रणाली की निम्नलिखित में कौन सी कठिनाइयां हैं (1)

a) दोहरे संयोग का अभाव

b) वस्तु विभाजन में कठिनाई

c) सर्वमान्य मूल्य मापक का अभाव

d) उपरोक्त सभी

(घ) MPC को निम्न में से किसी के द्‌वारा प्रदर्शित किया जाता है: (1)

a) $\frac{C}{Y}$

b) $\frac{\Delta C}{\Delta Y}$

c) $\frac{\Delta S}{\Delta Y}$

d) APC+1

(ड़) निम्नलिखित दोनों कथनो को पढ़कर सही विकल्प चुनिए: (1)

अभिकथन (A): उत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत सृजित आय की संख्या के चक्रीय प्रवाह के रूप में की जा सकती है।

कारण (R): प्रवाह का ना कोई आरंभ होता है और ना कोई अंत होता है।

a) A तथा R दोनों सही तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

b) A तथा R दोनों सहयोग तथा R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

c)A सही है तथा R गलत है।

d) A तथा R दोनों गलत है।

16. समष्टि अर्थशास्त्र क्या है? (1)

उत्तर: अर्थशास्त्र की बहस शाखा जिसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था की सामूहिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

17. बंद अर्थव्यवस्था क्या है? (1)

उत्तर: ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें शेष विश्व के साथ आयात और निर्यात वर्जित होता है।

18. भारत के केन्द्रीय बैंक का नाम लिखिए। (1)

उत्तर: भारतीय रिजर्व बैंक

19. मुद्रा के प्राथमिक कार्य लिखिए। (2)

उत्तर: **विनिमय का माध्यम-** मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करती है। वर्तमान में मुद्रा विनिमय का सबसे अधिक तरल साधन है।

मूल्य का माप:- मुद्रा मूल्य के माप की इकाई के रूप में कार्य करती है दूसरे शब्दों में यह मूल्य के मानक माप के मानदंड के रूप में कार्य करती है जिससे अन्य सभी चीजों को मापा जा सकता है। आधुनिक समय में प्रत्येक वस्तु का मूल्य मुद्रा में मापा जा सकता है। मुद्रा के प्रयोग से मूल्य मापने की आर्थिक गणना सरल हो गई है।

20. सीमांत उपभोग परवर्ती (MPC) को स्पष्ट कीजिए। (2)

उत्तर: सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)

आय में होने वाले परिवर्तन से उपभोग में होने वाले परिवर्तन में आनुपातिक संबंध को सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते है।

पीटरसन के अनुसार, “सीमांत उपभोग प्रवृत्ति से हमारा अभिप्राय आय में परिवर्तन से प्रेरित उपभोग व्यय से है”।

$$MPC = \Delta C / \Delta Y$$

21. व्यापार संतुलन तथा अदायगी संतुलन में क्या अंतर है? (2)

उत्तर:

व्यापार संतुलन	अदायगी संतुलन
व्यापार संतुलन या BoT एक वित्तीय विवरण है जो देश के शेष विश्व के साथ वस्तुओं के आयात और निर्यात को दर्शाता है।	भुगतान संतुलन या बीओपी एक वित्तीय विवरण है जो देश द्वारा शेष विश्व के साथ किए गए सभी आर्थिक लेन-देन का ब्यौरा रखता है।
यह किसी देश को वस्तुओं के आयात और निर्यात से होने वाले शुद्ध लाभ या हानि से संबंधित है।	यह राष्ट्र द्वारा किए गए लेन-देन के उचित लेखा-जोखा से संबंधित है।
BoT का शुद्ध प्रभाव सकारात्मक, नकारात्मक या शून्य हो सकता है।	BoP का शुद्ध प्रभाव सदैव शून्य होता है।

22. एक केंद्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन कीजिए। (2)

उत्तर: केंद्रीय बैंक के प्रमुख कार्य:

- **मुद्रा जारी करना**

  केंद्रीय बैंक देश की आधिकारिक मुद्रा जारी करता है और उसका प्रबंधन करता है.

- **मौद्रिक नीति का प्रबंधन**

  केंद्रीय बैंक ब्याज़ दरें निर्धारित करता है और नकदी प्रवाह को नियंत्रित करता है.

- **बैंकों का बैंक**

  केंद्रीय बैंक, सभी वाणिज्यिक बैंकों को ऋण और दिशा-निर्देश देता है.

23. सरकार के एजेंट एवं सलाहकार के रूप में केंद्रीय बैंक की भूमिका को समझाए। (3)

उत्तर: सरकार का बैंकर और सलाहकार के रूप में सरकार की भूमिका-

1. **सरकार के एजेंट के रूप में:** केंद्रीय बैंक विभिन्न मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों को लागू करने में सरकार के एजेंट के रूप में कार्य करता है। यह सरकार की ओर से विभिन्न गतिविधियाँ करता है, जैसे सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन, विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन और सरकार की बजटीय नीतियों को क्रियान्वित करना। केंद्रीय बैंक सरकार के खातों का प्रबंधन भी करता है और सरकारी प्रतिभूतियों की नीलामी भी करता है।

2. **सरकार का सलाहकार:** केंद्रीय बैंक मुद्रास्फीति नियंत्रण, राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति और विनिमय दर प्रबंधन जैसे विभिन्न आर्थिक मामलों पर सरकार के सलाहकार के रूप में कार्य करता है। यह इन मामलों पर सरकार को विशेषज्ञ सलाह और मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे उन्हें सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है जिससे अर्थव्यवस्था को लाभ होगा।

अथवा

प्रश्न: व्यावसायिक बैंक प्रमुख के कार्य बताये। (3)

उत्तर: व्यावसायिक बैंक के कार्य

जमा स्वीकार करना

सभी व्यावसायिक बैंक अपना मुख्य कार्य में सबसे प्रथम जनता के धन को जमा स्वीकार करता है जैसे चालू जमा खाता सावधि जमा खाता आवर्ती जमा खाता ऋण उपलब्ध कराना ।

ऋण उपलब्ध कराना

व्यावसायिक बैंको का मुख्य कार्य में जनता को ऋण उपलब्ध कराना भी होता है- जैसे नकद साख, अधिविकर्ष, विनिमय पत्रों की कटौती आदि।

24. स्टॉक और प्रवाह की संकल्पना को स्पष्ट कीजिए। (3)

उत्तर: **स्टॉक:**

स्टॉक का संबंध एक समय बिंदु या किसी निश्चित समय से होता है। स्टॉक का समय काल नहीं होता है।

जैसे दूरी, एक टैंक में रखा पानी, मुद्रा की मात्रा, पूंजी आदि।

प्रवाह:

प्रवाह मात्रा है जो एक समय अवधि में मापी जाती है। प्रवाह का समय काल होता है।

जैसे प्रतिमाह, प्रति मिनट, प्रतिवर्ष, प्रतिदिन आदि।

25. सिद्ध कीजिए कि: MPC + MPS = 1 **(3)**

उत्तर: हां, सिद्ध किया जा सकता है कि MPC + MPS = 1:

- आय में बदलाव, उपभोग में बदलाव और बचत में बदलाव के योग के बराबर होता है.
- आय की एक इकाई में बढ़ोतरी या तो उपभोग में या बचत में ही होती है.
- करों और आयातों को नज़रअंदाज़ करते हुए, MPC और MPS का योग हमेशा 1 के बराबर होता है

26. राष्ट्रीय की गणना करने की किन्हीं दो विधियों को संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (5)

उत्तर: **राष्ट्रीय आय का मापन - उत्पाद विधि/ मूल्य वृद्धि विधि**

इसके अंतर्गत देश में एक वर्ष में उत्पन्न *वस्तुओं और सेवाओं का शुद्ध मूल्य* ज्ञात किया जाता है और फिर उसे जोड़ लिया जाता है।

राष्ट्रीय आय की माप

प्रथम कदम: उत्पादन क्षेत्रों की पहचान तथा वर्गीकरण

उत्पादन के तीन क्षेत्र होते है-

1. **कृषि या प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector)-** कृषि, वन, मछलीपालन, पशुपालन, खनन एवं उत्खनन आदि
2. **उद्योग या द्वितीयक क्षेत्र (Secondary Sector)-** निर्माण उद्योग, बिजली की आपूर्ति, जल एवं गैस आदि।
3. **सेवा या तृतीयक क्षेत्र (Tertiary Sector)-** यातायात, संचार, व्यापार, सार्वजानिक प्रशासन, बैंक, बीमा आदि।

दूसरा कदम: उत्पाद मूल्य की गणना

अंतिम वस्तु का मूल्य = कुल उत्पाद मूल्य - मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य

उत्पादन मूल्य = बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन (ΔS)

मूल्य वृद्धि = उत्पादन मूल्य - मध्यवर्ती वस्तुएं

तीसरा कदम- राष्ट्रीय आय का आकलन

सकल मूल्य वृद्धि (GVAmp)/ (GDPmp) = VAp + VAs + VAt

OR

GDPmp= बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन (ΔS) - मध्यवर्ती वस्तुएं

साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि (NVAfc)/ शुद्ध घरेलु उत्पाद (NDPfc)-

NVAfc/ NDPfc= GVAmp - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर - मूल्यह्रास

साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNPfc)=

NNPfc = NDPf + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA)

राष्ट्रीय आय का मापन- आय विधि (Income Method)

आय विधि वह विधि है जो एक लेखा वर्ष में उत्पादन के साधनों जैसे **श्रम, पूंजी, भूमि व उद्यम** के उसकी उत्पादक सेवाओं के बदले में क्रमशः ***मजदूरी, लगान, ब्याज तथा लाभ*** के रूप में किया भुगतान की गणना करके राष्ट्रीय आय की माप करती है

आय विधि के अंतर्गत सभी साधन आयों का योग करके राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है।

आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने के कदम

पहला कदम: साधन आय का वर्गीकरण

उत्पाद तथा प्राप्त आयो का उचित वर्गीकरण किया जाता है

साधन	साधन आय
भूमि	लगान
पूंजी	ब्याज
श्रम	पारिश्रमिक
साहसी	लाभ
स्वरोजगार	मिश्रित आय

दूसरा कदम: घरेलू आय का आकलन

सभी प्रकार के साधन आयों का योग करके घरेलू आय अर्थात साधन लागत पर घरेलू उत्पादन की गणना की जाती है

घरेलू आय (NDPfc) = ब्याज + लगान + लाभ + पारिश्रमिक + मिश्रित आय

तीसरा कदम: राष्ट्रीय आय की गणना

राष्ट्रीय आय की गणना के लिए घरेलू आय में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ दिया जाता है।

राष्ट्रीय आय (NNPfc) = NDPfc + NFIA

अथवा

निम्नलिखित आंकड़ों द्वारा साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDPfc) ज्ञात कीजिए (5)

	मदे	**₹ (करोड़ में)**
1	मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य	250
2	अप्रत्यक्ष कर	40
3	स्थिर पूंजी का उपभोग	50
4	उत्पाद का मूल्य	700

उत्तर:

GDPfc= उत्पाद का मूल्य - मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य - अप्रत्यक्ष कर

GDPfc= 700 - 250 - 40

GDPfc= 700 - 290

GDPfc= ₹410 करोड़

27. कींस के रोजगार सिद्धांत की व्याख्या कीजिए। (5)

उत्तर: कीन्स के रोजगार सिद्धान्त की व्याख्या -

1. रोजगार प्रभावपूर्ण माँग (Effective Demand) पर निर्भर करता है;

प्रभावपूर्ण माँग = कुल उत्पादन = कुल आय = कुल रोजगार

2. प्रभावी माँग कुल माँग फलन (ADF) तथा कुल पूर्ति फलन (ASF) द्वारा निर्धारित होती है।

3. प्रभावपूर्ण माँग पर मुख्य प्रभाव कुल माँग फलन (ADF) का ही पड़ता है, क्योंकि कुल पूर्ति फलन (ASF) अल्पकाल में स्थिर रहता है।

4. कुल माँग फलन (ADF) कुल व्यय द्वारा निर्धारित होता है।

कुल व्यय तीन बातों पर निर्भर करता है -

(i) उपभोग व्यय (C), (ii) निवेश व्यय (I) तथा (iii) सरकारी व्यय (G)।

5. उपभोग व्यय (C) दो बातों द्वारा निर्धारित होता है-(i) आय का आकार, (ii) उपभोग प्रवृत्ति। उपभोग प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है - (i) औसत उपभोग प्रवृत्ति

(APC), (ii) सीमान्त उपभोग व्यय (MPC)। उपभोग प्रवृत्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है।

6. विनियोग व्यय (I) भी दो बातों पर निर्भर करता है - (i) पूँजी की सीमान्त दक्षता (MEC) तथा (ii) ब्याज की दर (r)

7. MEC दो बातों पर निर्भर करती है - (i) पूँजी परिसम्पत्ति की पूर्ति कीमत पर तथा (ii) पूँजी परिसम्पत्ति की सम्भावित आय पर। निवेश जैसे-जैसे बढ़ाते हैं। पूँजी की सीमान्त दक्षता घटती जाती है।

8. ब्याज की दर (r) भी दो बातों से प्रभावित होती है- (i) तरलता पसंदगी तथा (ii) द्रव्य की पूर्ति। द्रव्य की पूर्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है

9. तरलता पसंदगी के भी तीन उद्देश्य होते हैं लेन-देन उद्देश्य, सतर्कता उद्देश्य तथा सट्टा उद्देश्य।

28. निम्नलिखित केस अध्ययन को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

व्यापार शेष का संबंध व्यापार की केवल दृश्य मदों से है। किसी देश के कुल दृश्य निर्यात और कुल दृश्य आयात मूल्य में जितना अंतर होता है उसे देश का व्यापार के कहा जाता है। दृश्य मदों में भौतिक वस्तुएं जैसे मशीन, कपड़ा, सीमेंट, कंप्यूटर आदि सम्मिलित है। भुगतान शेष व्यापार शेष की तुलना में एक अधिक विस्तृत शब्द है। व्यापार शेष में व्यापार के केवल दृश्य मदे ही शामिल होती हैं जबकि भुगतान शेष में तीन प्रकार के आर्थिक सौदे या मदें सम्मिलित होती है:

दृश्य मदे, अदृश्य मदे तथा पूंजी अंतरण

1.किसी देश के कुल दृश्य निर्यात एवं आयात के मूल्य को क्या कहते हैं? (1)

उत्तर: व्यापार शेष

2.भुगतान शेष के अंतर्गत कौन कौन सी मदें सम्मिलित होती है? (1)

उत्तर: भुगतान शेष में तीन प्रकार के आर्थिक सौदे या मदें सम्मिलित होती है:

दृश्य मदे, अदृश्य मदे तथा पूंजी अंतरण

3.दृश्य मदों के अंतर्गत क्या सम्मिलित किया जाता है? (1)

उत्तर: दृश्य मदों में भौतिक वस्तुएं जैसे मशीन, कपड़ा, सीमेंट, कंप्यूटर आदि सम्मिलित है।

4.व्यापार शेष एवं भुगतान शेष में अंतर स्पष्ट कीजिए? (2)

उत्तर: भुगतान शेष व्यापार शेष की तुलना में एक अधिक विस्तृत शब्द है। व्यापार शेष में व्यापार के केवल दृश्य मदे ही शामिल होती हैं जबकि भुगतान शेष में तीन प्रकार के आर्थिक सौदे या मदें सम्मिलित होती है:

दृश्य मदे, अदृश्य मदे तथा पूंजी अंतरण

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com